

पार्श्वनाथ विद्यापीठ स्वर्ण जयन्ति ग्रन्थ(फोल्डर नं. ०२०५१)

- सम्पादक -

डॉ. सागरमल जैन

डॉ. अशोक कुमार सिंह

मुख्य टाइटल

प्रकाशकीय

विषयानुक्रमणिका

हिन्दी खण्ड

आचारांग (प्रथमश्रुतस्कन्ध) के प्रामाणिक संस्करणों के कतिपय पाठों की समीक्षा एवं

भाषाकीय दृष्टि से उन्हें सुधारने की अनिवार्यता - डॉ. के. आर. चन्द्र -----	१-९
इसिभासियाइं के कुछ अध्ययनों का भाषाशास्त्रीय विश्लेषण - डॉ. दीनानाथ शर्मा -----	१०-१३
नयचक्र में उद्धृत आगम पाठों की समीक्षा - डॉ. जीतेन्द्र शाह -----	१४-१८
महाराष्ट्री प्राकृत में मूल य वर्ण का अभाव - डॉ. सुदर्शन लाल जैन-----	१९-२४
जैनागमों और आगमिक व्याख्याओं में नारद - डॉ. साध्वी प्रमोद कुमारी -----	२५-२६
जोइन्दुकृत अमृताशीति - सुदीप कुमार जैन -----	२७-३०
शतपदी प्रश्नोत्तर पद्धति में प्रतिपादित जैनाचार - रूपेन्द्र कुमार पगारिया -----	३१-४२
पठमचरियं के हिन्दी अनुवाद में कतिपय त्रुटियाँ - पं. विश्वनाथ पाठक -----	४३-४९
कवि हरिराज कृत प्राकृत मलयसुंदरीचरियं - डॉ. प्रेमसुमन जैन -----	५०-५७
अनुयोगद्वारसूत्र और वैदिक व्याख्यान पद्धति की तुलना - कानजी भाई पटेल -----	५८-५९
जैन दर्शन में हेतुलक्षण - डॉ. धर्मचन्द्र जैन-----	६०-६७
जैनधर्म में ईश्वरविषयक मान्यता का अनुचिन्तन - डॉ. कृपाशंकर व्यास -----	६८-७४
चित्र-अद्वैतवाद का जैन दृष्टि से तार्किक विश्लेषण - डॉ. लालचन्द्र जैन -----	७५-८६
जैन दर्शन में मन - डॉ. बच्छराज दूगड़ -----	८७-९१
लेश्या द्वारा व्यक्तित्व रूपान्तरण - डॉ. मुमुक्षु शांता जैन -----	९२-१०१
आचार्य कुन्दकुन्द की आत्मदृष्टि-एक चिन्तन - हुकुचंद संगवे-----	१०२-१०७
गीता, उसका शांकरभाष्य और जैन दर्शन - डॉ. रमेशचन्द्र जैन -----	१०८-११६
जैन एवं काण्टीय दर्शनों की समन्वयवादी शैली - डॉ. वंशिष्ठ नारायण सिन्हा -----	११७-१२४
जैनधर्म और इस्लाम में अहिंसा-तुलनात्मक दृष्टि डॉ. निजामुद्दीन-----	१२५-१३१
जैन शिक्षा दर्शन में गुरु की अर्हताएँ - डॉ. विजय कुमार -----	१३२-१३८
तप - प्रा. डॉ. एच. यू. पण्ड्या -----	१३९-१४९
णायकुमारचरित के दार्शनिक मतों की समीक्षा - जिनेन्द्र कुमार जैन -----	१५०-१५६
योग का अधिकारी-हरिभद्रीय योग के सन्दर्भ में - कुमारी अरुणा आनन्द -----	१५७-१६४
आख्यानकमणिकोश के २४वें अधिकार का मूल्यांकन - अनिल कुमार महेता -----	१६५-१७१
जैन-जैनेतर दर्शनों में अहिंसा -----	१७२-१७४

समाधिमरण जीवन से भागना नहीं – डॉ. रज्जनकुमार -----	१७५-१८०
जैन शास्त्रों में आहार-विज्ञान – प्रो. नन्दलाल जैन -----	१८१-१८४
श्रमण-महावीर तीर्थ का प्रमुख स्तम्भ – महोपाध्याय विनयसागर -----	१९५-२०२
जैन पुराणकालीन भारत में कृषि – डॉ. देवी प्रसाद मिश्र -----	२०३-२०६
वादिराजसूरि के जीवनवृत्त का पुनर्निरीक्षण – डॉ. अजय कुमार जैन -----	२०७-२१३
साहित्यिक उन्नयन में भट्टारकों का अवदान – डॉ. पी. सी. जैन -----	२१४-२१८
कविवर बनारसीदास और जीवनमूल्य – डॉ. नरेन्द्र भानावत -----	२१९-२२५
जम्बूद्वीप और आधुनिक भौगोलिक मान्यताओं का तुलनात्मक विवेचन – डॉ. हरीन्द्रभूषण जैन -----	२२६-२३७
आयुर्वेद साहित्य के जैन मनीषी – डॉ. हरीश्वन्द्र जैन -----	२३८-२४४
मारवाड़ चित्रशैली एवं जैन विज्ञप्ति पत्र – डॉ. मधु अग्रवाल -----	२४५-२५०
एलोरा की जैन सम्पदा – डॉ. आनन्द प्रकाश श्रीवास्तव -----	२५१-२५२

English Section

A Critical Review of the Old Arya Metre Restored in the Text of Itthiparinna – Dr. K. R. Chandra -----	1-6
Positive Contents of Jainism – Johari Mal Parekh -----	7-21
Concept of Liberation and Its Prerequisites (According to Pancasutram of Critanacarya) – Dr. S. K. Bharadwaj -----	22-31
The Idea of Impermanence – Prof. Madhao S. Ranadive -----	32-36
Jaina Asceticism – An Appraisal – Dr. Yugal Kishore Mishra -----	37-42
Some Remarks on the Analysis of the sensuous cognition (Mati-jnana) Process – Piotr Balcerowicz -----	43-46
Colour-An Innate Property of the Matter – Dr. Anilk Kumar Jain -----	47-51
Dhruvarasi Takanika in Jaina Canons – Dr. L. C. Jain -----	52-57
Ancient Indian and South-east Asia as known from Jaina Sources -----	58-61
Historical Significance of early Jaina Kadamba Inscriptions -----	62-67
Wall Paintings as Depicted in the Patodi Jaina Temple, Jaipur – Rita Pratap -----	68-74
Chaitya Paripati and Ahmedabad of Early Seventeenth Century – Prof. R. N. Maheta -----	75-77